रात्रि क्लास 26/12/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है ?

जितना बाप को याद करेंगे फिर तुमको न ठंडी न गर्मी असर करेगी। याद की यात्रा के सिवाय और कुछ नहीं। स्वर्ग में सुख के सिवाय और कोई बात होती ही नहीं। बाप को बुलाते भी हो भविष्य सुखधाम का मालिक बनाओ। इस दुःखधाम से मुक्त करो। अभी तो बाप कहते हैं तुम बच्चों के पुरूषार्थ पर है। पवित्र बनना भी बच्चों के ऊपर है। बाप तो सिर्फ़ इशारा देते हैं। इतना टाइम क्यों लगता है। स्टूडेन्ट दाखिल होते जाते हैं तो ठहरना पड़ता है। बाकी माया को वश करने का वशीकरण मंत्र एक ही है, जो एक बाप ही दे सकते हैं। बाप कहते हैं तुम बच्चों ने भक्ति मार्ग में कहा है–बाबा, आप आवेंगे तो हम आपके बिगर कोई को याद नहीं करेंगे। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते मुझे याद करो और दैवीगुण धारण करो। घर–बार नहीं छोड़ना है। तुमको जंगल में जाने की दरकार नहीं। पूछते हैं–बाबा, मकान बनावें? बाबा कहते हैं–क्यों नहीं, भल मकान बनाओ। कहते हैं बाबा विनाश आवेगा। तो तुम्हारे पैसे भी तो विनाश हो जावेंगे। इसलिये पैसे हैं तो भल बनाओ। आराम ले लो। बाबा मना नहीं करते हैं। बाबा भी बनाते हैं बच्चों के लिये। अपने लिये थोड़े ही बनाते हैं। यह तो पुराने में रहते हैं। वहाँ तुमको वर्सा मिलता है; परन्तु कुछ अहंकार नहीं होता है। अभी तुम देही–अभिमानी बनते हो तो वह चलता है। यहां तो संन्यासियों आदि को कितना अहंकार है। वह परिचय तो लेंगे ही (न)हीं। वह खुद ही समझते हैं हम ब्रह्म में लीन होने वाले हैं। सा0 में कोई फायदा नहीं। भक्ति में सा0 होता है फायदा कुछ भी नहीं। अल्पकाल का सुख मिलता है। यहां तुमको सा0 होता है कुछ पाने लिये। अक्सर करके ब्रह्मा का, ल0ना0 का सा0 होता है तो पढ़कर ऐसा बनना है। एमआबजेक्ट का सा0 होता है। तुम बच्चों को (कृष्)ण का सा0 भक्ति–मार्ग में बहुत होता है। यहां सा0 के लिये कोई मेहनत नहीं। बच्चियां कितनी ढेर सा0 में (जा)ती थीं। खेलते रहते थे। सा0 होते ही हैं कि ऐसा पढ़कर तुमको बनना है। राधे के भक्त होंगे तो कहेंगे जिधर देखता हूँ राधे ही राधे; परन्तु वह राधे बन नहीं सकते। तुमको तो सा0 होता है इसलिये कि ऐसा बनना (है)। बाप आये ही हैं स्वर्ग का मालिक बनाने अर्थात् देवी–देवता धर्म में ट्रान्सफर करने। तुमको ज्ञान है। भक्ति मार्ग में ज्ञान होता ही नहीं। ज्ञान से सद्गति हो जाती है। सद्गति माना ही सतयुग में जाना। दुर्गति माना (कल)युग में जाना। रावण से रावण (राज्य) शुरू होता है। तो दुर्गति में जाते हैं। आगे तुम कुछ भी नहीं .....ते थे। बाप आते ही हैं मनुष्य से देवता बनाने। गायन भी है मनुष्य से देवता किये करत ना लागे वार। .... तुम्हारी युद्ध है माया के साथ। तुम याद करते हो माया भुलाती है। 84 के जन्मों का चक्र जानने में (तक)लीफ नहीं। बाकी युद्ध याद में ही चलती है। बहुत कड़ी यद्ध है। आधा को तो बरोबर माया खा जाती है। .....त को माया हरा देती है। माया ऑलमाइटी है तो बाप भी आलमाइटी है। तो रावण भी आलमाइटी है। ..... आधा है। द्वापर से कलियुग तक रावण राज्य होता है 2500 वर्ष, फिर सतयुग–त्रेता में 2500 वर्ष (तुम्हा)रा राज्य चलता है। ..... माया बहुतों को खा जाती है। बिल्कुल आधा ही को खा जाती है। अभी तुम ..... लेकर आई हो दूसरी वारी आवेगी तो जरूर एक–दो को गवांकर आवेगी। लिखती हो ना बाबा फलाना ..... था बहुत अच्छा चलता था अभी आता ही नहीं है। इसमें मुंझने की तो बात ही नहीं। कल्प2 ऐसा होता है। तुम कितना ऊंच पद पाते हो। सभी के लिये एक ही बेहद का टीचर आता है सद्गति देने लिये। प्यार भी ..... को पाता है। पहले मां–बाप से प्यार होता है, फिर स्त्री से, फिर बच्चे से प्यार हो जाता है। उसमें भी बच्चा (हुआ) तो खुश होंगे। बच्ची होगी तो खुश नहीं होंगे। कोई2 तो फिर कन्या के लिये समझते हैं लक्ष्मी घर में है। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यारख गुडनाइट और नमस्ते।

डायरैक्शनः– दिल्ली में हॉस्टल (ट्रेनिंग क्लास) कायदे मुजीव न बनी है। कोई बच्ची को जल्दी में बाबा की राय बिगर न भेजना है; क्योंकि प्रबंध ठीक न बना हुआ है बापदादा के दिल पसंद।